लेख
Paper ID: SDES-IJIR 79

SDES-International Journal of Interdisciplinary Research
(Peer Reviewed Refereed Journal) ISSN (O): 2582:7162
Crossref DOI: 10.47997/SDES-IJIR/02-02-2021
https://shreedadueducational.com/journal

शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिग समानता के लिए परिवर्तित नीति एवं व्यवहार

डॉ. चन्द्रमोहन सारस्वत

प्रिन्सिपल रघुकुल कॉलेज ऑफ एजुकेशन

Corresponding Email: dr_chandra_mohan@raghukulcollege.co.in

प्रस्तावना

शैक्षिक समानता का सिद्धान्त भारतीय संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकारों, मौलिक कर्तव्यों और नीति निर्देशक सिद्धान्तों में प्रतिपादित है। संविधान महिलाओं को न केवल समानता का दर्जा प्रदान करता है, अपितु राज्यों को महिलाओं के पक्ष में सकारात्मक भेदभाव के उपाय करने की शक्ति भी प्रदान करता है,किन्तु देखने में आ रहा है कि हमारें देश में लिंग आधारित भेदभाव बहुत व्यापक स्तर पर काम कर रहा है। इस भेदभाव में सामाजिक और राजनीतिक पहलू भी अपना कार्य कर रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक व्यवहारों को रूढिगत विचारधारा के इतर समझने का प्रयास करना होगा।

मुख्य शब्दावली : शिक्षा, क्षेत्र, लैंगिग समानता, परिवर्तित, नीति एवं व्यवहार

Received	Accepted	Available online
23/06/2021	29/06/2021	05/07/2021

सामाजिक रीति–नीति एंव सामाजिक व्यवहार, शिक्षकों की अभिवृति, समायोजन एंव मूल्यों को प्रभावित
करने का कार्य करते हैं। अपने शोध अध्ययन के दौरान उत्तर प्रदेश के आगरा मण्डल में विभिन्न अभिकरणों द्वारा संचालित माध्यमिक विधालयों के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति, समायोजन एंव मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया। जिसमें 450 महिला शिक्षक तथा 450 पुरूष शिक्षकों पर अध्ययन किया गया तथा समायोजन के क्षेत्र में सांख्यिकीय परीक्षण के पश्चात सकियात्मक परिकल्पना को स्वीकृत किया गया अर्थात पुरूष तथा

महिला शिक्षकों के पुरूष शिक्षकों सम्बन्धी समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। इसका मुख्य कारण यह माना गया कि दोनों ही वर्गो के समक्ष परिस्थितियों, संसाधन,शैक्षिक उद्देश्य, प्रशिक्षण एंव अन्य शैक्षिक गतिविधियॉ समान होती हैं तथा समान संसाधन तथा सुविधा उपलब्ध होती है, जिसके कारण दोनों ही वर्ग वैचारिक रूप से समानता रखते है।

शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक समानता के लिऐ परिवर्तित नीति एंव व्यवहार

इसमें दोनों ही वर्गो को समान वेतन तथा अन्य सेवा परिलाभ भी अन्य शिक्षकों के समान ही होते है जो समायोजन की क्षमता को समान रूप से प्रलोभित करता है। अतः पुरूष एंव महिला माध्यमिक विधालयी शिक्षको के समायोजन की क्षमता के कोई अन्तर देखने को नहीं मिला किन्तु मूल्यों के सन्दर्भ में लैंगिक भिन्नता शिक्षकों के मूल्यों को प्रभावित करती है। पुरूषों की अपेक्षा महिला शिक्षकों के मूल्यों का स्तर उच्च पाया गया।

अध्ययन के उपरान्त निष्कर्षतः इसका मुख्य कारण है कि प्रकृति जन्य

विशेषताओं के कारण उस पर अधिक ध्यान दिया जाता है तथा महिलाओं को अपने बच्चों में नैतिक गुणों का विकास करने तथा उसकी उच्च चिन्तनशीलता का प्राकृतिक गुण उनके मानसिक विकास में मूल्यों के आदर्श स्थापित कर देता है, जबकि पुरूष शिक्षक स्वाभाविक रूप से अपने व्यक्तिगत आवरण के प्रति संवेदनशील होते हैं। अतः नैसर्गिक भिन्नता के कारण पुरूषों की अपेक्षा महिला शिक्षकों में मूल्यों का उच्च स्तर विकसित होता है। शोध अध्ययन के दौरान महिला एंव पुरूष शिक्षकों की छात्र केन्द्रित व्यवहारों सम्बन्धी अभिवृत्ति में अन्तर देखने को मिला इस अन्तर का मुख्य कारण महिलओं पर अपने व्यवसाय के साथ–साथ घरेलू काम–काज की भी पूर्ण रूप से जिम्मेदारी होती है, अर्थात वह अनेक घरेलू कार्यो को देखती है, जिसके कारण महिला शिक्षक माध्यमिक स्तर के छात्रों के साथ औपचारिकता के साथ पेश आती हैं ,वही पुरूष शिक्षक छात्रों को अपने साथ जोडने में परेशानी महसूस

नही करते साथ ही भारतीय सामाजिक रूढिवादिता एंव रीति–नीति के कारण माध्यमिक स्तर के पुरूष छात्रों के साथ एक निश्चित सीमा तक ही वैचारिक अन्तःक्रिया हो पाती है, जबकि पुरूष शिक्षकों के साथ इस प्रकार की कोई सामाजिक रीति–नीति प्रचलन में नहीं है।

शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक समानता के लिऐ परिवर्तित नीति एंव व्यवहार

जिसके कारण पुरूष शिक्षक छात्रों के साथ उनके व्यवहारों के प्रति सरलता से जुडाव महसूस करते है।

अतः विभिन्न शोध अध्ययनों के निष्कर्षतः लैंगिकता के आधार पर भारतीय समाज में विभिन्नता स्पष्टतः दिखाई देती है, किन्तु समयानुसार वर्तमान में सामाजिक नीति एंव व्यवहार में परिवर्तन स्पष्टतः दिखाई दे रहा है। वर्तमान में महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण तथा समावेशी आर्थिक विकास धीरे–धीरे लैंगिक असमानता को दुस्कर कर रहा है। वैश्विक युवाओं को विचारधारा में बदलाव आ रहा है। यूवा पीढी सामाजिक रूढीवादिता की वेडियों से मुक्त होना चाहती है। भारत में युवाओं की संख्या बहुत अधिक है। एक अध्ययन के अनुसार भारत की औसत आयु 29 वर्ष है। अतः महिलाओं के शैक्षिक एंव आर्थिक सशक्तीकरण हेतु लैंगिक समानता के प्रति रूढीगत विचारों को त्यगना होगा।

राष्ट्रीय यूवानीति 2014 में बिना किसी लैगिक भेदभाव के युवाओं को सशक्त बनाने का दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से व्यक्त होता है। इस नीति में पॉच उद्देश्य एंव ग्यारह प्राथमिक क्षेत्रों की पहचान की गई है। ग्यारह प्राथमिक क्षेत्रों में शिक्षा दक्षता विकास और रोजगार, उधमिता, स्वास्थ्य खेल, सामाजिक मूल्य, सामुदायिक भागीदारी, राजनीति और प्रशासन में भागीदारी युवाओं का जुडाव समावेश और सामाजिक न्याय शामिल है।

लैंगिक समानता पर संयुक्त राष्ट्र सहयोग समूह ने कुछ सुझाव दिये जैसे लैंगिक समानता के मुद्दों पर जानकारी को व्यापक करना, साझा कार्यक्रमों के माध्यम से जन समर्थन जुटाना, शोध एंव संवाद को बढावा देना तथा अन्तर सरकारी निकायों के माध्यम से लैंगिक समानता के लिऐ

संयुक्त राष्ट्र साझा सहयोग को समर्थन देना प्रमुख है।

शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक समानता के लिऐ परिवर्तित नीति एंव व्यवहार

साथ ही लैंगिक असमानता को दूर करने के लिऐ विभिन्न उपक्रम जैसे यूएन वुमैन, यूनिसेफ, यूएन एफ.पी.ए तथा यूएन डी.पी अपना कार्य कर रहे हैं जिसमें लिंग चयन और बाल विवाह के विरूद्ध अपना समर्थन देना प्राथमिकता में है।

लैंगिक समानता के लिऐ विभिन्न नीतियों एंव नियमों को लागू करने के लिऐ समाज में व्यवहारगत परिवर्ततन अत्यन्त आवश्यक है। हमें अपनी शैक्षिक व्यवस्था को इतना सुदृढ बनाना होगा कि लिंग के आधार पर किसी भी प्रकार की वैमनस्यता एंव विषमता शिक्षा प्रणाली में परिलक्षित नहीं हो।

संदर्भ–

- किंग– कोटेडवाई गुप्ता,एम.एल,एम.एल एंव शर्मा,डी.डी, सामाजिक अन्वेषण की सर्वेक्षण पद्धतियॉ (1998) पृष्ट संख्या–266.
- कोठारी शिक्षा आयोग– 1964–66 रिपोर्ट।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 1986, रिपोर्ट– उदयोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा के नये आयाम– राम गोपाल सोनी, पृष्ट संख्या– 127.
- प्रो. हुमायु कबीर– एडवर्सिटी एण्ड एजुकेशन (1998), हिन्द प्रकाशन, आगरा।
- प्रो. नेल्सन– विकास का समाजशास्त्र (1957), पृष्ट संख्या–56.
- गुडवार एंव स्केट्स– मैथेडॉलोजी ऑफ एजूकेशन रिसर्च न्यूयार्क, पृष्ट संख्या– 104–105.
- फील्डमैन.आर.एच– द रिलेशनशिप ऑफ स्कूल एण्ड सैक्स टू ट्रेडीशनल मॉडर्न एटीट्यूड्स अमॉग गुसली स्टूडैण्ट्स इन कीनियॉ "जनरल ऑफ सोशल साईकोलोजी " 76(1) पृष्ट संख्या–135–136.
- सिंह अजयजीत व बावा एस.के– एडजैस्टमैण्ट ऑफ वर्किंग वूमन,प्राची जनरल आफ साईको–कल्चरल डाइमैन्शन्स 1996. वो.12(1) पृष्ट संख्या–15.20.